कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#3. अलसकथा (आलसियों की कहानी)

अलसकथा (आलसियों की कहानी) : नोट्स

1. पाठ का परिचय (Introduction to the Chapter) :

- **पाठ का नाम :** अलसकथा (आलसियों की कहानी)
- **स्रोत ग्रन्थ (Source Text) :** पुरुषपरीक्षा
- **लेखक (Author) : विद्यापति** । वह एक लोकप्रिय **मैथिली कवि** थे और उन्होंने कई संस्कृत ग्रंथों की भी रचना की ।
- **नीति-वचन :** नीतिकार **आलस्य** को **शत्रु** (रिपुरूपं) मानते हैं ।

2. मुख्य घटनाएँ और पात्र (Main Events and Characters) :

पात्र (Characters) :

- **वीरेश्वर:** मिथिला के मंत्री ।
- **स्वभाव:** वह **दानशील** और **दयावान** (कारुणिकः) थे ।
- **कार्य:** वह प्रतिदिन **गरीबों (दुर्गतेभ्यो)** और **अनाथों** को **इच्छा-भोजन** (मनचाहा भोजन) दिलवाते थे । **आलसियों** को तो भोजन के साथ **वस्त्र** भी दिलवाते थे ।

कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#3. अलसकथा (आलसियों की कहानी)

धूर्तों का प्रवेश (Entry of the Cheats) :

- आलसियों को वहाँ आसानी से भोजन-वस्त्र मिलते देखकर, बहुत से **तोंद बढ़ाने वाले (तुन्दपरिमृजाः)** और **धूर्त** लोग (धूर्ताः) भी आ गए।
- वे **बनावटी आलस्य (कृत्रिममालस्यम्)** दिखाकर भोजन लेने लगे।
- **सिद्धान्त:** सभी सगे-संबंधी सुख को देखकर **दौड़ते हैं**।

परीक्षा और आग (The Test and the Fire) :

- **आलस-शाला** में **अधिक धन खर्च** (बहुद्रव्यव्ययं) होते देखकर, वहाँ के कर्मचारियों (तन्नियोगिपुरुषैः) ने **परीक्षा** करने का विचार किया।
- उन्होंने आलसियों के **सोये** रहने पर **(प्रसुप्तेषु) घर में आग (वह्निं)** लगवा दी।
- **परिणाम:**
    1. आग को बढ़ते देखकर **सभी धूर्त** सबसे पहले **भाग गए** (पलायिताः)।
    2. उसके बाद **थोड़े-से आलसी** (ईषदलसाः) भी भाग गए।
    3. लेकिन **चार पुरुष** (चत्वारः पुरुषाः) वहीं **सोए** रहे और आपस में बातें करने लगे।

चार आलसियों का संवाद (Dialogue of the Four Idlers) :

1. **पहला (वस्त्रावृतमुखेन):** "अरे! यह कैसा **शोर** (कोलाहलः) है?"

2. **दूसरा:** "लगता है कि **इस घर में आग लग गई है** (अग्निर्लग्नोऽस्ति)।"
3. **तीसरा:** "कोई भी इतना **दयालु** (धार्मिकः/कारुणिकः) नहीं है, जो इस समय **गीले वस्त्रों या चटाई** से हमें ढक दे।"
4. **चौथा:** "अरे **वाचालों** (बहुत बोलने वालों)! कितनी बातें बोल सकते हो? **चुपचाप (तूष्णीं)** क्यों नहीं रहते?"

आलसियों की गति/ भाग्य (The Destiny of Idlers) :

- आग को उन पर गिरते देखकर, कर्मचारियों ने **जान के भय** (वधभयेन) से **बाल** (केशेष्वाकृष्य) पकड़कर उन चारों को घर से बाहर निकाला।
- **नियुक्त पुरुषों ने पढ़ा: स्त्रियों** का सहारा **पति** होता है, **बच्चों** का सहारा **माता** होती है, लेकिन **आलसियों** का सहारा दुनिया में **दयावान (कारुणिकं)** के बिना **कोई नहीं** होता।
- **अन्त:** मंत्री वीरेश्वर ने उन चारों असली आलसियों को पहले से भी **अधिक वस्तु** दिलवाई।

कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#3. अलसकथा (आलसियों की कहानी)

अलसकथा पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ

1. आलस्य सबसे बड़ा शत्रु है

- **मुख्य शिक्षा :** नीतिकार **आलस्य (laziness)** को मनुष्यों के शरीर में स्थित **सबसे महान शत्रु (महारिपुः)** मानते हैं।
- यह पाठ हमें सिखाता है कि जो व्यक्ति आलसी होता है, वह अपनी भूख की अग्नि को शांत करने के लिए भी कुछ नहीं कर पाता, इसलिए जीवन में **आलस्य का पूरी तरह से त्याग** (सर्वथा त्याज्यम्) करना चाहिए।

  श्लोक : *आलस्यं हि मनुष्याणां, शरीरस्थो महारिपुः।* (आलस्य मनुष्य के शरीर में स्थित सबसे बड़ा शत्रु है।)

2. परिश्रम ही सच्चा मित्र है :

- **मुख्य शिक्षा :** आलस्य को छोड़कर **परिश्रम (उद्यम)** को अपनाना चाहिए। परिश्रम के समान हमारा कोई **सगा-संबंधी (बन्धु)** नहीं है, जिसे करके मनुष्य कभी दुखी (नावसीदति) नहीं होता।
- सफलता और प्रगति के लिए उद्यमी (मेहनती) होना ज़रूरी है।

3. लोभ और दिखावे से बचें :

- **मुख्य शिक्षा :** इस कथा में धूर्त (चालाक) लोग केवल भोजन के लोभ में आकर **बनावटी आलस्य (कृत्रिममालस्यम्)** का नाटक करते हैं।

- यह सिखाता है कि हमें **लोभ** और **दिखावे** से दूर रहना चाहिए, क्योंकि संकट (जैसे- आग) आने पर ये धूर्त सबसे पहले भाग जाते हैं और असली मुसीबत में केवल सच्चे गुणवान व्यक्ति ही काम आते हैं।

4. दया का महत्व :

- **मुख्य शिक्षा:** आलसियों का अंतिम सहारा **दयावान (कारुणिक)** व्यक्ति ही होता है।
- मन्त्री वीरेश्वर जैसे दयालु और परोपकारी व्यक्ति ही समाज के असहाय (असहाय) लोगों की सहायता करते हैं।

निष्कर्ष : 'अलसकथा' का सार यह है कि हमें जीवन में **आलस्य छोड़कर उद्यम** करना चाहिए और यह भी समझना चाहिए कि जहाँ दान की व्यवस्था है, वहाँ **धूर्तों का दिखावा** भी ज़रूर होता है, इसलिए हमें **विवेक** से काम लेना चाहिए।